प्रस्तुत करता है, उन्होंने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिसंवादों, संगोष्ठियों और काव्य-उत्सवों में विचारधाराओं, बाज़ारवाद और बुनियादपरस्ती की समकालीन तानाशाही के विरुद्ध साहित्य की स्वायत्तता के लिए आवाज़ उठाई है। कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के संपादक के रूप में उन्होंने कविता और आलोचना में युवा प्रतिभाओं और समकालीन तथा शास्त्रीय कलाओं की आलोचनात्मक जागरूकता का प्रसार करने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। वे साहित्य, संगीत, नृत्य, नाटक, दृश्यकलाओं, लोक एवं जनजातीय कलाओं, सिनेमा आदि से संबंधित हज़ारों कार्यक्रमों के आयोजक रहे हैं। उन्हें *साहित्य अकादेमी पुरस्कार, दयावती कवि शेखर सम्मान* और *कबीर सम्मान* प्रदान किए गए हैं। उनके आठ काव्य संकलनों केअ नुवादअ ंग्रेज़ी,प्र ांसीसी,प ोलिश,उ र्दू,ब ंग्ला,ग ुजराती, मराठी और राजस्थानी भाषाओं में हुए हैं।

उन्होंने पेरिस में बसे भारतीय कला मूर्धन्य सैयद हैदर रज़ा पर दो बड़ी पुस्तकें लिखी हैं और 7 अमूर्त समकालीन भारतीय कलाकारों पर भी एक पुस्तक लिखी है। उनके द्वारा भोपाल में बहुकला केंद्र के रूप में विख्यात भारत भवन स्थापित किया गयाअ ौरए कद शकत कस ंचालितभ ीह ुआ।म हात्माग ाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (भारत सरकार द्वारा स्थापित) के पहले कुलपति रह चुके श्री वाजपेयी एक वर्ष से भीअ धिकस मयव ेंि लएर ाष्ट्रीयस ंग्रहालयव ेक र्यवाहक महानिदेशक और राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के उपाध्यक्ष रहे हैं।

भारत के एक विशिष्ट बुद्धिजीवी श्री वाजपेयी एक सृजनात्मक विश्व-पर्यटक हैं, जिन्होंने सम्मेलनों में भाग लेने, व्याख्यान देने के क्रम में कई बार यूरोप आदि का भ्रमण किया है।उ न्होंनेप ोलैण्डव ेच ारप ्रमुखक वियों,च ेस्लाव,म ीवोष, डब्लयू षिम्बोस्का, ब ीग्न्येव हबेर्त और तादेऊष रूजेविच की कृतियों का हिंदी अनुवाद किया है । वह जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अतिथि लेखक और के.के. बिरला

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

संयोजक

डॉ. अनुपम आहुजा

अध्यापक शिक्षा एवं विस्तार विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016

फोन +91-11-26560620

फैक्स +91-11-26868419

वेबसाइट www.ncert.nic.in

email : dtee1999@rediffmail.com

सौजन्य

प्रो. वी.जी. जाधव, *प्रधानाचार्य*

डॉ. एस.वी. शर्मा, *कार्यक्रम समन्वयक*

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर 305 004, राजस्थान

फोन +0145-2643720,2643864

फैक्स +045-2643862

email : rieajmer@yahoo.com

एन.सी.ई.आर.टी. स्मृति व्याख्यान माला

मार्जरी साइक्स चतुर्थ स्मृति व्याख्यान

साहित्य क्यों ?

वक्ता – श्री अशोक वाजपेयी

अध्यक्ष, ललित कला अकादमी

अध्यक्ष – श्री हेमन्त शेष

सचिव, सूचना व प्रसारण

23 अगस्त 2010 दोपहर 2.30

आर.आई.ई., अजमेर

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

एन.सी.ई.आर.टी. स्मृति व्याख्यान माला

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) एक शीर्ष संगठन है जो स्कूल और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अनुसंधान, सर्वेक्षण, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्य करके केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को सहायता करता है तथा उनको परामर्श देता है ।

परिषद् के उद्देश्यों में से एक है–स्कूल और शिक्षक शिक्षा से संबंधित विचारों के वितरण–केंद्र और प्रसारक के रूप में काम करना। इस भूमिका को निभाने के लिए तथा महान शैक्षिक विचारकों के जीवन एवं कार्य का यशोगान करने के लिए हमने वर्तमान स्मृति व्याख्यान माला की शुरुआत की है।

स्मृति व्याख्यान माला का शीर्षक

- गिजुभाई बड़ेखा स्मृति व्याख्यान
- रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान
- ज़ाकिर हुसैन स्मृति व्याख्यान
- महादेवी वर्मा स्मृति व्याख्यान
- बी.एम. पुग स्मृति व्याख्यान
- सावित्रीबाई फूले स्मृति व्याख्यान
- मार्जरी साइक्स स्मृति व्याख्यान
- श्री अरविंद स्मृति व्याख्यान
- महात्मा गाँधी स्मृति व्याख्यान

हम अंग्रेजी में या किसी अन्य भारतीय भाषा में व्याख्यान देने के लिए शिक्षा जगत और सार्वजनिक जीवन के लब्ध–प्रतिष्ठ पुरुषों एवं महिलाओं को आमंत्रित करेंगे। हमारा आशय विशाल श्रोतागणों विशेषकर शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों, लेखकों, कलाकारों, गैर–सरकारी संगठनों, सरकारी कर्मचारियों तथा स्थानीय समुदाय के लोगों तक पहुँचना है।

हमारा लक्ष्य भारत के प्रख्यात पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए बीजगर्भित योगदान के बारे में जन जागरूकता के स्तर को ऊपर उठाने का प्रयत्न करना है। हमें उम्मीद है कि इस प्रकार की जागरूकता से संवाद और चर्चा की एक श्रृंखला सृजित होगी। हमें आशा है कि राष्ट्रीय जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में जनता के स्थायी योगदान को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ यह शिक्षा को बौद्धिक जिज्ञासा का जीवंत विषय बनाएगा।

हमें आशा है कि ये सभी व्याख्यान मालाएं हमारे श्रोताओं तथा आम जनता के लिए उपयोगी होंगी।

विषय – साहित्य क्यों ?

हमारा समय बेहद हिंसक है – संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार इस समय दुनिया में सौ के लगभग युद्ध, बगावत, सैन्य विद्रोह आदि चल रहे हैं। प्राय: सभी धर्म आक्रामक और हिंसक हो रहे हैं – वे दूसरों की क्या अपनी ही बहुलता के प्रति असहिष्णु हो गए हैं। बाज़ार की हिंसा है, आतंक या उग्रवाद की हिंसा है। राजनीति और आर्थिकी भी आक्रामक मुद्राएँ अपना रही हैं। बाज़ार पर एकाग्र आर्थिकी कई प्रकार की तानाशाही को, उपभोक्तावाद और लोभ की तानाशाही, एकरूपता की तानाशाही को पोस रही है। एक ऐसी व्यवस्था का एकाधिकार जिसमें दुनिया विचारों से नहीं चीज़ों से बदल रही है। मनुष्य के दो महान आविष्कार 'व्यक्ति' और 'समाज' लोप के कगार पर हैं।

हमारे युग में राज्य, राजनीति और आर्थिकी के उच्चतम स्तरों पर झूठ बोला जा रहा है। सच की प्रकृति और स्थिति हमारे समय में समयबद्ध है और वह अत्यंत दुविधाग्रस्त हो गई है। सच का पालन एक शिथिल पड़ती आदत है और निजी तथा सार्वजनिक में ऐसे प्रलोभन बढ़ गए हैं जो सच के साथ से विरत करते हैं। एकांत के लिए, स्वप्न के लिए, कल्पना के लिए आकाश सिकुड़ रहा है। अधिकाधिक लोग अपनी मातृभाषाओं से वंचित हो रहे हैं तथा अपनी जातीय स्मृतियाँ और सांस्कृतिक जड़ें खो रहे हैं। व्याख्यान इस जटिल संदर्भ में साहित्य की ज़रूरत पर विचार करेगा।

वक्ता के बारे में

अशोक वाजपेयी हिंदी कवि, आलोचक, अनुवादक तथा संपादक भारत की एक बड़ी सांस्कृतिक उपस्थिति हैं। कविता की 13 पुस्तकों, आलोचना की 7 पुस्तकों और अंग्रेज़ी में कला पर 3 पुस्तकों सहित उन्हें संस्कृति में नवोन्मेषी संस्था–निर्माता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने भारतीय और विदेशी संस्कृतियों के मध्य परस्पर जागरूकता और आपसी संवाद को बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया है। अपने काव्य में उन्होंने प्रेम, घर, प्रकृति, कलाओं, नश्वरता आदि पर ज्यादा ज़ोर दिया है और एक आलोचक के रूप में उन्होंने साहित्य के चिरस्थायी मूल्यों, नैतिक दायित्वों और आत्म–प्रश्नात्मकता पर बल दिया है। इस विचार का समर्थन करते हुए कि साहित्य, सच्चाइयों और कल्पना का जनतंत्र